भारतीय विद्यालय डारसेट

हिंदी कार्यपत्रिका -6

दुख का अधिकार- प्रश्नोत्तर

तैयार किया गया : श्रीमती बीना स्टिफन

दिनांक : _____ छात्र /छात्रा का नाम :_____

कक्षा : IX "ब"

	निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 25-शब्दों में लिखिए। 30	
1.	भगवाना कौन था ?	
उ.	भगवाना खरबूजे बेचने वाली बुढ़िया का बेटा था । भगवाना शहर के पास डेढ़ बीघा ज़मीन पर हरी तरकारियाँ तथा खरबूजे उगाया करता था । वह रोज़ ही उन्हें सब्जी मंडी या फुटपाथ पर बैठकर बेचा करता था । इस प्रकार वह अपने परिवार का निर्वाह करता था ।	
2.	पोशाक हमारे लिए कब बंधन और अड़चन बन जाती है ?	
उ.	जब हम अपने से कम हैसियत रखने वाले मनुष्य के साथ बात करते हैं तो हमारी पोशाक हमें ऐसा नहीं करने देती । हम स्वयं को बड़ा मान बैठते हैं और सामने वाले को छोटा मानकर उसके साथ बैठने तथा बात करने में संकोच अनुभव करते हैं ।	
3.	मनुष्य के जीवन में पोशाक का क्या महत्व है ?	
उ.	मनुष्य के जीवन में पोशाक का महत्व है। उसकी पोशाक ही समाज में उसका दर्जा तथा अधिकार तय करती है। पोशाक के कारण कभी उसके सब रास्ते खुल जाते हैं और कभी अड़चनें घेरती हैं ।	
4.	लेखक उस स्त्री के रोने का कारण क्यों नहीं जान पाया ?	
उ.	लेखक ने देखा कि वह स्त्री फुटपाथ पर बैठकर फफक-फफककर रोए चली जी रही थी । लेखक की पोशाक तथा स्थिति ऐसी थी कि उसके बाज़ार में बैठकर उसका हाल-चाल जानना कठिन था । इससे उसे भी संकोच होता तथा लोग भी व्यंग्य करते । इसलिए वह	

	चाहकर भी उसके रोने का कारण नहीं जान पाया ।	
5	भगवाना अपने परिवार का निर्वाह कैसे करता था ?	
उ.	भगवाना शहर के पास डेढ़ बीघा जमीन पर हरी तरकारियाँ तथा खरबूजे उगाया करता था। वह रोज ही उन्हें सब्जी मंडी या फुटपाथ पर बैठकर बेचा करता था। इस प्रकार वह कछिआरी करके अपने परिवार का निर्वाह करता था ।	
6.	लड़के की मृत्यु के दूसरे ही दिन बुढ़िया खरबूज़े बेचने क्यों चल पड़ी ?	
उ.	लड़के की मृत्यु के अगले ही दिन उसकी माँ के सामने पोतों की भूख और बहू की बीमारी की समस्या आ खड़ी हुई । पोते-पोतियाँ भूख से बिलबिला रहे थे और बहू बुखार से तप रही थी । घर में पैसा नहीं था, इसलिए वह मजबूरी में पुत्र-शोक के अगले ही दिन खरबूजे बेचने चल पड़ी ।	
7.	बुढ़िया के दुख को देखकर लेखक को अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला की याद क्या आई ?	
उ.	लेखक ने बुढ़िया के पुत्र-शोक को देखा । उसने अनुभव किया कि इस बेचारी के पास रोने-धोने का भी समय और अधिकार नहीं है। तभी उसकी तुलना में उसे अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला की याद आ गई। वह महिला पुत्र-शोक में ढ़ाई-महीने तक पलंग पर पड़ी रही थी ।	
	<u>निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 50-शब्दों में लिखिए। 60</u>	
1.	बाज़ार के लोग खरबूज़े बेचनेवाली स्त्री के बारे में क्या - क्या कह रहे थे? अपने शब्दों में लिखिए ।	
उ.	बाज़ार के लोग खरबूज़े बेचनेवाली स्त्री के बारे में तरह-तरह की बातें बना रहे थे। कोई उसे बेहया कह रहा था । किसी ने कहा कि उस स्त्री की नीयत ही ठीक नहीं है ।एक आदमी ने कहा कि यह कमीनी औरत है जिसके लिए बेटा-बेटी, खसम-लुगाई, धर्म-ईमान कुछ नहीं है । उसके लिए रोटी का टुकड़ा ही सब कुछ है । एक लाला जी ने कहा कि यह औरत औरों का धर्म-ईमान बिगाड़कर अँधेर मचा रही है । पुत्र-शोक के कारण यह सूतक में है । इसलिए उसे इन दिनों में कोई सामान नहीं छूना चाहिए ।	
2.	पास-पडोस की दुकानों से पूछने पर लेखक को क्या पता चला ?	
उ.	पास – पड़ोस की दुकानों से पूछने पर लेखक को पता चला कि उस बुढ़िया का एक जवान पुत्र था - भगवाना। वह तेईस साल का था। वह शहर के पास डेढ़ बीघे जमीन पर	

	सब्जियाँ उगाकर बेचा करता था। एक दिन पहले सुबह-सवेरे वह पके हुए खरबूजे तोड़ रहा था कि उसका पैर एक साँप पर पड़ गया । साँप ने उसे डस लिया, जिससे उसकी मौत हो गई । उसके मरने के बाद घर का गुजारा करने वाला कोई नहीं था । अत: मजबूरी में उसे अगले दिन खरबूज़े बेचन के लिए बाज़ार में बैठना पड़ा ।	
3.	लड़के को बचाने के लिए बुढ़िया माँ ने क्या- क्या उपाय किए ?	
उ.	बुढ़िया का बेटा भगवाना साँप के डसने से बेहोश हो गया था । जैसे ही बुढ़िया को पता चलावह उसका विष दूर करने के लिए गाँव के ओझा को बुला लाई। ओझा ने , खूब झाड़-फूँक की। परंतु साँप का विष दूर न हो सका । बुढ़िया जो कर सकती थी, उसने किया। उसने ओझा को प्रसन्न करने के लिए नागराज की पूजा भी की ।घर में जो आटा और अनाज था, वह भी ओझा के हवाले कर दिया ।परंतु इतना करने पर भी उसका पुत्र बच न सका ।	
4.	लेखक ने बुढ़िया के दुख का अंदाजा कैसे लगाया?	
उ.	लेखक ने बुढ़िया के दुख का अंदाजा लगाने के लिए अपने पड़ोस में रहने वाली एक संभ्रांत महिला को याद किया । उस महिला का पुत्र पिछले वर्ष चल बसा था। तब वह महीला ढाई मास तक पलंग पर पड़ी रही थी। उसे अपने पुत्र की याद में मूर्छा आ जाती थी। वह हर पन्द्रह मिनट बाद मूर्छित हो जाती थी। दो-दो डॉक्टर हमेशा उसके सिरहाने बैठे रहा करते थे । उसके माथे पर हमेशा बर्फ की पट्टी रखी रहती थी । पुत्र-शोक मनाने के सिवाय उसे कोई होश-हवास नहीं था , न ही कोई जिम्मेवारी थी । उस महिला के दुख की तुलना करते हुए उसे अंदाजा हुआ कि इस गरीब बुढ़िया का दुख भी कितना बड़ा होगा।	
5. उ.	इस पाठ का शीर्षक ‘दुख का अधिकार‘ कहा तक सार्थक है ? स्पष्ट कीजिए । इस पाठ का शीर्षक दुख का अधिकार एकदम उचित है। लेखक यह कहना चाहता है कि यद्यपि दुख प्रकट करना हर व्यक्ति का अधिकार है। परंतु हर कोई इसे संभव नहीं कर पाता। एक महिला संपन्न है। उस पर कोई जिम्मेदारी नहीं है। उसके पास पुत्र शोक मनाने कि लिए डॉक्टर है, सेवा-कर्मी हैं, साधन हैं, धन है, समय है । परंतु गरीब लोग अभागे हैं। वे चाहे भी तो शोक प्रकट करने के लिए आराम से दो आँसू नहीं बहा सकते। सामने खड़ी भूख, गरीबी और बीमारी नंगा नाच करने लगती है । अत: दुख प्रकट करने का अधिकार गरीबों को नहीं है ।	